(ग) चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊं,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।

अथवा

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ..
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 12901 **K**

Unique Paper Code. : 2055091003

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) – C

Name of the Course : **B.Com. (Programme)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (12×2=24)

(i) हिंदी भाषा की संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ii) हिंदी की किसी एक बोली की विशेषताएं बताईए।

(iii) आदिकाल के नामकरण पर विभिन्न विद्वानों के मतों पर प्रकाश डालिए।

SRI AUROBINDO COLLEGE तमसो मा ज्योतिर्गमय UNIVERSITY OF DELHI

(iv) भारतेंदु युग की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

2. निर्गुण साहित्य में कबीर की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

सूरदास के वात्सल्य भाव का वर्णन कीजिए

3. बिहारी अथवा घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (12)

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

धूमिल की कविता 'रोटी और संसद' समाज की विद्रुपता को दर्शाती है, वर्णन कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए – (10×3=30)

(क) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।
कबीरा संगत साधू की ज्यों गंधी का बास।
जो कुछ गंधी दे नहीं तौ भी बास सुबास।।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस।।
सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकि रही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्यामसुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूरदास, रसिकन की बतियां पुरवौ मन जगदीस।।

(ख) कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है नैननु ही सब बात।।
कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराये नर, वा पाए बौराये।।

अथवा

रावरे रूप की रीती अनूप, नयो-नयो लागै ज्यों-ज्यों निहारियै।
त्यों इन आंखिन बानि अनोखी अधानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।।
एक ही जीव हुतौ सु तौ, वायौं, सुजान, संकोच और सोच सहारियै।
रोकौ रहै न, दहै घनाआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै।।

P.T.O.

SRI AUROBINDO COLLEGE तमसो मा ज्योतिर्गमय UNIVERSITY OF DELHI